सिलसिला नं. 53

Imame Husain Ki Karamat (Hindi)

इमामे हुसैन رضی اللہ تعالیٰ عنہ की करामात

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उर्दू ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है। मजलिसे तराजिम, दा'वते इस्लामी (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे करसवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं ! ! !

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

"शहीदे करबला" के नव हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की 9 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ۔** मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (مُعجَم کبیر ج ٦ ص١٨٥ حدیث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल : ﴾1﴿ आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है ﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा।

❁ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये, फ़ज़ीलते दीनी ह़ासिल करने के लिये क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ❁ इस रिसाले का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ❁ मौक़अ़ की मुनासबत से عَزَّوَجَلَّ, صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه, رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा ❁ तज़्किरए अहले बैत पढ़ने सुनने की बरकतें ह़ासिल करूंगा ❁ इस ह़दीसे पाक **تَهَادَوْا تَحَابُّوْا** या'नी "एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी" (مؤطا ج٢ ص٤٠٧ حدیث١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह रिसाला ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ❁ तोह़फ़ा देते वक़्त इल्मे दीन आ़म करने की निय्यत भी करूंगा ❁ अच्छी निय्यतों के साथ रिसाला पढ़ने पर जो सवाब ह़ासिल होगा वोह सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ❁ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़लमा से पूछ लूंगा ❁ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो मुसन्निफ़ या नाशिरीन को तह़रीरन मुत्त़लअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

नाम रिसाला : **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه **की करामात**
पहली बार : 10,000
नाशिर : मकतबतुल मदीना, अह़मदआबाद।

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

इमामे हुसैन की करामात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

शैतान लाख सुस्ती दिलाए मगर आप सवाब की निय्यत से येह रिसाला (41 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का सीना ह़ुब्बे अहले बैत का मदीना बन जाएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

बेचैन दिलों के चैन, नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "जब जुमे'रात का दिन आता है **अल्लाह** पाक फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन जुमे'रात के दिन और शबे जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है ।"

(ابن عساکر ج٤٣ ص١٤٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

विलादते बा करामत

राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, जिगर गोशए मुर्तज़ा, दिलबन्दे फ़ात़िमा, सुल्त़ाने करबला, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्ना काम, ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن सरापा करामत थे ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **विलादते बा सआ़दत भी बा करामत** है । सय्यिदुना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की विलादते बा सआदत 5 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 4 सि.हि. को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا में हुई। (معجم الصحابه للبغوی ج۲ ص۱٤) हज़रत सय्यिदी आरिफ़ बिल्लाह नूरुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی "शवाहिदुन्नुबुव्वत" में फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि इमामे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह है। **हज़रते सय्यिदुना यह़्या** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **और इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ **के इलावा कोई ऐसा बच्चा ज़िन्दा न रहा जिस की मुद्दते ह़म्ल छ[6] माह हुई हो।** وَاللّٰهُ تَعالٰی اَعلَمُ وَرسولُهٗ اَعلَم عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰه تعالٰی علیه واٰلہٖ وسلَّم (شَواهِدُ النُّبُوَّة ص۲۲۸)

मरह़बा सरवरे आ़लम के पिसर आए हैं — सय्यिदह फ़ातिमा के लख़्ते जिगर आए हैं

वाह क़िस्मत ! कि चराग़े ह़रमैन आए हैं — ऐ मुसल्मानो ! मुबारक कि हुसैन आए हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नाम व अल्क़ाब

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मुबारक नाम : **हुसैन**, कुन्यत : अबू अ़ब्दुल्लाह और अल्क़ाब : सिब्ते़ रसूलुल्लाह और रैह़ानतुर्रसूल (या'नी रसूल के फूल) है।

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से इमामे हुसैन के फ़ज़ाइल पर 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **हुसैन** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) मुझ से है और मैं हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) से हूं, **अल्लाह** पाक उस से महब्बत फ़रमाता है जो हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) से महब्बत करे[1] ﴾2﴿ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से जिस ने महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने इन से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की[2] ﴾3﴿ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) दुन्या में मेरे दो फूल हैं[3] ﴾4﴿ हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) जन्नती जवानों के सरदार हैं ।[4]

रुख़्सार से अन्वार का इज़्हार

हज़रते अ़ल्लामा जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं : हज़रते इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शान येह थी कि **जब अंधेरे में तशरीफ़ फ़रमा होते तो आप** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه **की मुबारक पेशानी और दोनों मुक़द्दस रुख़्सार** (या'नी गाल) **से अन्वार निकलते और क़ुर्बो जवार ज़ियाबार** (या'नी अत़राफ़ रोशन) हो जाते ।

(شَواهِدُ النُّبُوَّة ص٢٢٨)

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(हदाइके़ बख़्शिश, स. 246)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

۱: ترمذی ج٥ ص٤٢٩ حديث ٣٨٠٠
۲: المستدرك ج٤ ص١٥٦ حديث ٤٨٣٠
۳: بخاری ج٢ ص٥٤٧ حديث ٣٧٥٣
٤: ترمذی ج٥ ص٤٢٦ حديث ٣٧٩٣

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

कूंएं का पानी उबल पड़ा

हज़रते सय्यिदुना इमामे आली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब मदीनए मुनव्वरह से मक्कए मुकर्रमा زَادَهُمَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की त़रफ़ रवाना हुए तो रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुत़ीअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मुलाक़ात हुई । उन्हों ने अ़र्ज़ की : मेरे कूंएं में पानी बहुत कम है, बराहे करम ! दुआ़ए बरकत से नवाज़ दीजिये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस कूंएं का पानी त़लब फ़रमाया । जब पानी का डोल ह़ाज़िर किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुंह लगा कर उस में से पानी नोश किया (या'नी पिया) और कुल्ली की । फिर डोल को वापस कूंएं में डाल दिया तो **कूंएं का पानी काफ़ी बढ़ भी गया और पहले से ज़ियादा मीठा और लज़ीज़ भी हो गया ।** (طبقاتِ اِبنِ سعد ج٥ ص١١٠ مُلَخَّصاً)

बाग़ जन्नत के हैं बहरे मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सोने के सिक्कों की थैलियां

हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स ने अपनी तंगदस्ती (या'नी ग़ुरबत) की शिकायत की । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरे मुआ़विया** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार (या'नी सोने के सिक्कों) की पांच थैलियां आप

رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की बारगाह में पेश की गई । ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और इस करम नवाज़ी के बा वुजूद ताख़ीर पर मा'ज़िरत फ़रमाई ।

(کشف المحجوب ص۷۷ ملخّصاً)

या शहीदे करबला फ़रियाद है नूरे चश्मे फ़ातिमा फ़रियाद है
है मेरी ह़ाजत मैं त़यबा में मरूं ऐ मेरे ह़ाजत रवा फ़रियाद है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घोड़े ने बद लगाम को आग में डाल दिया

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामे हुमाम, इमामे तिश्ना काम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه यौमे आ़शूरा या'नी बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक 10 मुह़र्रमुल ह़राम 61 सि.हि. को यज़ीदियों पर इत्मामे हुज्जत (या'नी अपनी दलील मुकम्मल) करने के लिये जिस वक़्त मैदाने करबला में **ख़ुत्बा** इर्शाद फ़रमा रहे थे उस वक़्त आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मज़्लूम क़ाफ़िले के ख़ैमों की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़न्दक़ में रोशन कर्दा आग की त़रफ़ देख कर एक बद ज़बान यज़ीदी (मालिक बिन उ़र्वह) इस त़रह़ बक्वास करने लगा : "**ऐ हुसैन** ! तुम ने वहां की आग से पहले यहीं आग लगा दी !" ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : كَذَبْتَ يَاعَدُوَّ اللّٰه या'नी "ऐ दुश्मने ख़ुदा ! तू झूटा है, क्या तुझे येह गुमान है कि (مَعَاذَ اللّٰه) मैं दोज़ख़ में जाऊंगा !" इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़ाफ़िले के एक जां

निसार (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुस्लिम बिन औसजा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه) ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से उस मुंहफट बद लगाम के मुंह पर तीर मारने की इजाज़त त़लब की। ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह फ़रमा कर इजाज़त देने से इन्कार किया कि हमारी त़रफ़ से ह़म्ले का आग़ाज़ नहीं होना चाहिये। फिर इमामे तिश्नाकाम (या'नी प्यासे इमाम) رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दस्ते दुआ़ बुलन्द कर के अ़र्ज़ की : "ऐ रब्बे क़ह्हार ! इस ना बकार (या'नी शरीर) को अ़ज़ाबे नार से क़ब्ल भी इस दुन्याए ना पाएदार में आग के अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमा।" **फ़ौरन दुआ़ मुस्तजाब** (या'नी क़बूल) **हुई और उस के घोड़े का पाउं ज़मीन के एक सूराख़ पर पड़ा जिस से घोड़े को झटका लगा और बे अदब व गुस्ताख़ यज़ीदी घोड़े से गिरा, उस का पाउं रिकाब में उलझा, घोड़ा उसे घसीटता हुवा दौड़ा और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया ! और बद नसीब आग में जल कर भसम हो गया।** इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सज्दए शुक्र अदा किया, ह़म्दे इलाही बजा लाए और अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** करीम ! तेरा शुक्र है कि तू ने आले रसूल के गुस्ताख़ को सज़ा दी।" (सवानेह़े करबला, स. 138 मुलख़्ख़सन)

अहले बैते पाक से गुस्ताख़ियां बे बाकियां لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ***दुश्मनाने अहले बैत***

सियाह बिच्छू ने डंक मारा

गुस्ताख़ व बद लगाम यज़ीदी का हाथों हाथ भयानक अन्जाम देख कर भी बजाए इ़ब्रत ह़ासिल करने के इस को एक इत्तिफ़ाक़ी अम्र समझते हुए एक बेबाक यज़ीदी ने बका : आप को **अल्लाह** करीम के

रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क्या निस्बत ? येह सुन कर क़ल्बे इमाम को सख़्त ईज़ा पहुंची और तड़प कर दुआ मांगी : "ऐ रब्बे जब्बार ! इस बद गुफ़्तार (या'नी बुरा बोलने वाले) को अपने अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार फ़रमा ।" दुआ का असर हाथों हाथ ज़ाहिर हुवा, उस बक्वासी को एक दम क़ज़ाए ह़ाजत की ज़रूरत पेश आई, फ़ौरन घोड़े से उतर कर एक त़रफ़ को भागा और बरह्ना (या'नी नंगा) हो कर बैठा, **नागाह** (यकायक) **एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा, नजासत आलूदा तड़पता फिरता था, निहायत ही ज़िल्लत के साथ अपने लश्करियों के सामने उस बद ज़बान की जान निकली ।** मगर उन संग (या'नी पथ्थर) दिलों और बेशर्मों को इ़ब्रत न हुई इस वाक़िए़ को भी उन लोगों ने इत्तिफ़ाक़ी अम्र समझ कर नज़र अन्दाज़ कर दिया । (ऐज़न, स. 139)

अ़ली के प्यारे ख़ातूने क़ियामत के जिगर पारे
ज़मीं से आस्मां तक धूम है इन की सियादत की

गुस्ताख़े हुसैन प्यासा मरा

यज़ीदी फ़ौज का एक सख़्त दिल शख़्स इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के सामने आ कर यूं बकने लगा : "देखो तो सही दरियाए फ़ुरात कैसा मौजें मार रहा है, ख़ुदा की क़सम ! तुम्हें इस का एक क़त़रा भी न मिलेगा और तुम यूं ही प्यासे हलाक हो जाओगे ।" इमामे तिश्ना काम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने बारगाहे रब्बुल अनाम में अ़र्ज़ की : اَللّٰهُمَّ اَمِتْهُ عَطْشَانًا ۔ या'नी "या रब ! इस को प्यासा मार ।" इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के दुआ मांगते ही उस बे ह़या का घोड़ा बिदक कर दौड़ा, वोह पकड़ने

के लिये उस के पीछे भागा, प्यास का ग़लबा हुवा (या'नी ज़ोर की प्यास लगी), **इस शिद्दत की प्यास लगी कि अल अ़तृश ! अल अ़तृश !** या'नी हाए प्यास ! हाए प्यास ! **पुकारता था मगर पानी जब उस के मुंह से लगाते थे तो एक क़त्रा भी पी न सकता था यहां तक कि इसी शिद्दते प्यास में तड़प तड़प कर मर गया।**

(सवानेहे करबला, स. 140 मुलख़्ख़सन)

हां मुझ को रखो याद मैं हैदर का पिसर हूं　　और बाग़े नुबुव्वत के शजर का मैं समर हूं
मैं दीदए हिम्मत के लिये नूरे नज़र हूं　　प्यासा हूं मगर साक़िये कौसर का पिसर हूं

करामात इत्मामे हुज्जत की कड़ी थी

ऐ आ़शिक़ाने सहा़बा व अहले बैत ! देखा आप ने ! इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शाने आ़ली किस क़दर अ़ज़मत वाली है। मा'लूम हुवा कि ख़ुदावन्दे ग़फ़ूर को इमामे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बे अदबी क़त्अ़न (या'नी बिल्कुल) ना मन्ज़ूर है। और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का बदगो दोनों जहां में मरदूदो मत़रूद (या'नी धुत्कारा हुवा) है। गुस्ताख़ाने हुसैन को दुन्या में भी दर्दनाक सज़ाओं का सामना हुवा और इस में यक़ीनन बड़ी इब्रत है। सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی बा'ज़ गुस्ताख़ाने हुसैन के हाथों हाथ होने वाले इब्रतनाक बद अन्जाम के वाक़िआ़त नक़्ल करने के बा'द तह़रीर फ़रमाते हैं : फ़रज़न्दे रसूल को येह बात भी दिखा देनी थी कि उस की मक़्बूलिय्यते बारगाहे ह़क़ पर और उन के क़ुर्बो मन्ज़िलत पर जैसी कि नुसूसे कसीरा व अहा़दीसे शहीरा शाहिद (या'नी बहुत सारी दलीलें और मशहूर ह़दीसें गवाह) हैं ऐसे ही इन के ख़वारिक़ व

करामात भी गवाह हैं। अपने इस फ़ज़्ल का अ़मली इज़्हार भी इत्मामे हुज्जत (दलील पूरी करने) के सिल्सिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो कि जो ऐसा मुस्तजाबुद्दा'वात (या'नी जिस की दुआ़ क़बूल होती) है उस के मुक़ाबले में आना ख़ुदा (पाक) से जंग करना है। इस का अन्जाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समे इस से भी सबक़ न ले सके और दुन्याए ना पाएदार (या'नी कमज़ोर दुन्या) की ह़िर्स का भूत जो उन के सरों पर सुवार था उस ने उन्हें अन्धा बना दिया। (सवानेह़े करबला, स. 140)

नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्दे

इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत के बा'द आप के **सरे मुनव्वर** से मुतअ़द्दद (या'नी कई) करामात का ज़ुहूर हुवा। इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का **सरे अन्वर** रुस्वाए ज़माना यज़ीदी बद बख़्त "ख़ौली बिन यज़ीद" के पास था, वोह रात के वक़्त कूफ़ा पहुंचा। क़स्रे इमारत (या'नी गवर्नर हाउस) का दरवाज़ा बन्द हो चुका था। येह **सरे अन्वर** को ले कर अपने घर आ गया। ज़ालिम ने **सरे अन्वर** को बे अदबी के साथ ज़मीन पर रख कर एक बड़ा बरतन उस पर उलट कर उस को ढांप दिया और अपनी बीवी "नवार" के पास जा कर कहा : मैं तुम्हारे लिये ज़माने भर की दौलत लाया हूं, वोह देख ! हुसैन बिन अ़ली का सर तेरे घर पर पड़ा है। वोह बिगड़ कर बोली : "तुझ पर ख़ुदा की मार ! लोग तो सीमो ज़र (या'नी चांदी और सोना) लाएं और तू फ़रज़न्दे रसूल का **मुबारक सर** लाया है। ख़ुदा की क़सम ! अब मैं तेरे साथ कभी न रहूंगी।" "नवार" येह कह कर अपने बिछोने से उठी और

जिधर **सरे अन्वर** तशरीफ़ फ़रमा था उधर आ कर बैठ गई। उस का बयान है : **ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि एक नूर बराबर आस्मान से उस बरतन तक मिस्ले सुतून चमक रहा था और सफ़ेद परिन्दे उस के इर्द गिर्द मंडला रहे थे**। जब सुब्ह हुई तो ख़ौली बिन यज़ीद **सरे अन्वर** को इब्ने ज़ियादे बद निहाद के पास ले गया। (اَلْکامِل فی التّاریخ ج۳ ص٤٣٤)

बहारों पर हैं आज आराइशें गुलज़ारे जन्नत की
सुवारी आने वाली है शहीदाने महब्बत की

ख़ौली बिन यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम

दुन्या की महब्बत और मालो ज़र की हवस इन्सान को अन्धा और अन्जाम से बे ख़बर कर देती है। बद बख़्त ख़ौली बिन यज़ीद ने दुन्या ही की महब्बत की वज्ह से मज़्लूमे करबला का **सरे अन्वर** तन से जुदा किया था। मगर चन्द ही बरस के बा'द इस दुन्या ही में उस का ऐसा ख़ौफ़नाक अन्जाम हुवा कि कलेजा कांप जाता है चुनान्चे चन्द ही बरस के बा'द मुख़्तार सक़फ़ी ने क़ातिलीने इमामे हुसैन के ख़िलाफ़ जो इन्तिक़ामी कारवाई की उस ज़िम्न में सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : मुख़्तार ने एक हुक्म दिया कि करबला में जो शख़्स (लश्करे यज़ीद के सिपह सालार) अ़म्र बिन सा'द का शरीक था वोह जहां पाया जाए मार डाला जाए। येह हुक्म सुन कर कूफ़ा के जफ़ा शिआ़र सूरमा (ज़ालिम व ना इन्साफ़ बहादुर) बसरा भागना शुरूअ़ हुए। मुख़्तार के लश्कर ने उन का तआ़क़ुब (या'नी पीछा) किया जिस को जहां पाया ख़त्म कर दिया, लाशें

जला डालीं, घर लूट लिये। "ख़ौली बिन यज़ीद" वोह ख़बीस है जिस ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **सरे मुबारक** तने अक़्दस (या'नी जिस्मे अक़्दस) से जुदा किया था। येह रू सियाह भी गिरिफ़्तार कर के मुख़्तार के पास लाया गया, **मुख़्तार ने पहले इस के चारों हाथ पैर कटवाए फिर सूली चढ़ाया, आख़िर आग में झोंक दिया।** इस त़रह़ लश्करे इब्ने सा'द के तमाम अशरार (या'नी शरीरों) को त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक किया। छ[6] हज़ार कूफ़ी जो ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़त्ल में शरीक थे उन को मुख़्तार ने त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के साथ हलाक कर दिया।

ऐ तिश्नगाने ख़ूने जवानाने अहले बैत — देखा कि तुम को ज़ुल्म की कैसी सज़ा मिली
कुत्तों की त़रह़ लाशे तुम्हारे सड़ा किये — घूरे[1] पे भी न गोर[2] को तुम्हारी जा मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए — मरदूदो! तुम को ज़िल्लते हर दो सरा मिली
तुम ने उजाड़ा ह़ज़रते ज़हरा का बूसितां — तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ मिली
दुन्या परस्तो! दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें — दुन्या मिली न ऐ़शो त़रब[3] की हवा मिली
आख़िर दिखाया रंग शहीदों के ख़ून ने — सर कट गए अमां न तुम्हें इक ज़रा मिली

पाई है क्या नईम उन्हों ने अभी सज़ा
देखेंगे वोह जह़ीम[4] में जिस दम सज़ा मिली

(सवानेह़े करबला, स. 181)

1 : या'नी कचरा कूंडी **2 :** या'नी क़ब्र **3 :** या'नी ख़ुशी **4 :** दोज़ख़ के एक त़बक़े का नाम जह़ीम है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

सरे अक़्दस की तिलावत

सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है : जब यज़ीदियों ने ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे अन्वर** को नेज़े पर चढ़ा कर कूफ़ा की गलियों में गश्त किया उस वक़्त मैं अपने मकान के बालाख़ाने (या'नी ऊपर वाले ह़िस्से) पर था। जब **सरे मुबारक** मेरे सामने से गुज़रा तो मैं ने सुना कि **सरे पाक** ने (पारह 15 **सूरतुल कह्फ़** की आयत 9) तिलावत फ़रमाई :

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝۹

(پ۱۵، الکھف: ۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह (या'नी ग़ार) और जंगल के कनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे।

(شَواهِدُ النُّبُوَّة ص ۲۳۱)

इसी त़रह़ एक दूसरे बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया कि जब यज़ीदियों ने **सरे मुबारक** को नेज़े से उतार कर इब्ने ज़ियादे बद निहाद के महल में दाख़िल किया, तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मुक़द्दस होंट हिल रहे थे और ज़बाने अक़्दस पर पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत 42 की तिलावत जारी थी।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۬

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ **अल्लाह** को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।

(करामाते सह़ाबा, स. 246)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

इबादत हो तो ऐसी हो तिलावत हो तो ऐसी हो
सरे शब्बीर तो नेज़े पे भी क़ुरआं सुनाता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना मिन्हाल बिन अम्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने अपनी आंखों से देखा कि जब **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे अन्वर** को लोग नेज़े पर लिये जाते थे उस वक़्त मैं "दिमश्क़" में था। **सरे मुबारक** के सामने एक शख़्स **सूरतुल कह्फ़** पढ़ रहा था जब वोह आयत 9 पर पहुंचा :

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِیْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ اٰیٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾
(پ۱۵، الكهف: ۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह (या'नी ग़ार) और जंगल के कनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे।

उस वक़्त अल्लाह करीम ने कुव्वते गोयाई (या'नी बोलने की ताक़त) बख़्शी तो **सरे अन्वर** ने ब ज़बाने फ़सीह़ फ़रमाया : اَعْجَبُ مِنْ اَصْحَابِ الْكَهْفِ قَتْلِی وَ حَمْلِی "अस्ह़ाबे कह्फ़ के वाक़िए से मेरा शहीद होना और मेरे सर को लिये फिरना अ़जीब तर है।" (ابن عساکر ج۶۰ ص۳۷۰)

सर शहीदाने मह़ब्बत के हैं नेज़ों पर बुलन्द
और ऊंची की ख़ुदा ने क़द्रो शाने अहले बैत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی अपनी किताब "**सवानेहे करबला**" में येह ह़िकायत नक़्ल करने के बा'द

फ़रमाते हैं : दर ह़क़ीक़त बात येही है, क्यूं कि **अस्ह़ाबे कह्फ़** पर काफ़िरों ने ज़ुल्म किया था और **ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को उन के नानाजान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत (के लोगों) ने मेहमान बना कर बुलाया, फिर बे वफ़ाई से पानी तक बन्द कर दिया ! आल व अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ह़ज़रते इमामे पाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के सामने शहीद किया। फिर ख़ुद ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को शहीद किया, अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को असीर (या'नी क़ैदी) बनाया, **सरे मुबारक** को शह्र शह्र फिराया। **अस्ह़ाबे कह्फ़** सालहा साल की त़वील नींद के बा'द बोले येह ज़रूर अ़जीब है मगर **सरे अन्वर** का तने मुबारक से जुदा होने के बा'द कलाम फ़रमाना अ़जीब तर है। (सवानेह़े करबला, स. 175)

ख़ून से लिखा हुवा शे'र

यज़ीदे पलीद के नापाक लश्करी जब सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे मुबारक** को ले कर चले और पहली मन्ज़िल में ठहर कर नबीज़ या'नी खजूर का शीरा पीने लगे। (एक और रिवायत में है : وَهُمْ يَشْرَبُوْنَ الْخَمْر या'नी वोह शराब पीने लगे।[1]) इतने में एक **लोहे का क़लम** नुमूदार (या'नी ज़ाहिर) हुवा और उस ने **ख़ून** से येह शे'र लिखा :

اَتَرْجُوْ اُمَّةٌ قَتَلَتْ حُسَيْنًا شَفَاعَةَ جَدِّهٖ يَوْمَ الْحِسَابِ

(या'नी क्या हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़ातिल येह भी उम्मीद रखते हैं कि रोज़े क़ियामत उन के नानाजान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाएंगे ?)

(معجم کبیر ج۳ ص۱۲۳ حدیث۲۸۷۳)

[1] البداية والنهاية ج٥ ص٧٠٩

www.dawateislami.net

दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बि'सते शरीफ़ा (या'नी ए'लाने नुबुव्वत) से तीन सो बरस पहले येह शे'र एक पथ्थर पर लिखा हुवा मिला। (اَلصَّواعِقُ الْمُحْرِقة ص١٩٤)

सरे अन्वर की करामत से राहिब का क़बूले इस्लाम

एक नसरानी राहिब (या'नी क्रिस्चेन इबादत गुज़ार) ने गिरजा घर से सरे अन्वर देखा तो लोगों से पूछा, उन्हों ने बताया, राहिब ने कहा : "तुम बुरे लोग हो, क्या दस हज़ार अशरफ़ियां ले कर इस पर राज़ी हो सकते हो कि एक रात येह सर मेरे पास रहे।" उन लालचियों ने क़बूल कर लिया। राहिब ने **सरे मुबारक** धोया, ख़ुश्बू लगाई, रात भर अपनी रान पर रखे देखता रहा, एक नूर बुलन्द होता पाया। राहिब ने वोह रात रो कर काटी, सुब्ह़ इस्लाम लाया और गिरजा घर, उस का मालो मताअ़ छोड़ कर अपनी ज़िन्दगी अहले बैत की ख़िदमत में गुज़ार दी।

(اَلصَّواعِقُ الْمُحْرِقة ص١٩٩)

दौलते दीदार पाई पाक जानें बेच कर
करबला में ख़ूब ही चमकी दुकाने अहले बैत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिरहमो दीनार ठीक्रियां बन गईं

यज़ीदियों ने लश्करे इमाम आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और उन के ख़ैमों से जो दिरहमो दीनार लूटे थे और जो राहिब से लिये थे उन को तक़्सीम करने के लिये **जब थेलियों के मुंह खोले तो क्या देखा**

कि वोह सब दिरहमो दीनार ठीक्रियां बने हुए थे और उन के एक त़रफ़ (पारह 13 **सूरए इब्राहीम** की आयत 42)

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और हरगिज़ **अल्लाह** (पाक) को बे ख़बर न जानना ज़ालिमों के काम से।) और दूसरी त़रफ़ (पारह 19 **सूरतुश्शुअ़राअ** की आयत 227)

وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अब जाना चाहते हैं ज़ालिम कि किस करवट पर पलटा खाएंगे।) तह़रीर थी। (اَیضاً ص۱۹۹)

तुम ने उजाड़ा ह़ज़रते ज़हरा का बूसितां तुम ख़ुद उजड़ गए तुम्हें येह बद दुआ मिली
रुस्वाए ख़ल्क़ हो गए बरबाद हो गए मरदूदो! तुम को ज़िल्लते हर दो सरा मिली

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! येह क़ुदरत की त़रफ़ से एक दर्से इ़ब्रत था कि बद बख़्तो ! तुम ने इस फ़ानी दुन्या की ख़ातिर दीन से मुंह मोड़ा और आले रसूल पर ज़ुल्मो सितम का पहाड़ तोड़ा। याद रखो ! दीन से तुम ने सख़्त बे परवाई बरती और जिस फ़ानी व बे वफ़ा दुन्या के ह़ुसूल के लिये ऐसा किया वोह भी तुम्हारे हाथ नहीं आएगी और तुम خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَة (या'नी दुन्या में भी नुक़्सान और आख़िरत में भी नुक़्सान) का मिस्दाक़ हो गए।

दुन्या परस्तो दीन से मुंह मोड़ कर तुम्हें दुन्या मिली न ऐ़शो त़रब की हवा मिली

तारीख़ शाहिद है कि मुसल्मानों ने जब कभी अ़मलन दीन के मुक़ाबले में इस फ़ानी दुन्या को तरजीह़ दी तो इस बे वफ़ा दुन्या से भी

हाथ धो बैठे और जिन्हों ने इस फ़ानी दुन्या को लात मार दी और क़ुरआनो सुन्नत के अह़कामात पर मज़बूती से क़ाइम रहे और दीनो ईमान से मुंह नहीं मोड़ा बल्कि अपने किरदारो अ़मल से येह साबित किया :

सर कटे, कुम्बा मरे, सब कुछ लुटे दामने अह़मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न हाथों से छुटे

तो दुन्या हाथ बांध कर उन के पीछे पीछे हो गई और वोह दारैन (या'नी दोनों जहानों) में सुर्ख़ रू (या'नी काम्याब) हुए। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

वोह कि इस दर का हुवा, ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
वोह कि इस दर से फिरा, अल्लाह उस से फिर गया

सरे अन्वर कहां मदफ़ून हुवा ?

इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे अन्वर** के मदफ़न (या'नी दफ़्न होने की जगह) के बारे में इख़्तिलाफ़ है। "**त़बक़ाते इब्ने सा'द**" में है : **इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे अन्वर** को जन्नतुल बक़ीअ़ शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा के पहलू (Side) में दफ़्न कर दिया गया। (طبقاتِ ابنِ سعد ج٥ ص١٨٤) बा'ज़ का कहना है करबला में **सरे अन्वर** को जसदे मुबारक से मिला कर दफ़्न किया। (تذکرۃ الخواص ج ص٢٦٥) बा'ज़ कहते हैं कि : "यज़ीद ने हुक्म दिया था कि इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के **सरे अन्वर** को शहरों में फिराओ। फिराने वाले जब **अ़स्क़लान** पहुंचे तो वहां के अमीर ने उन से ले कर दफ़्न कर दिया।" बा'ज़ कहते हैं कि जब "अ़स्क़लान पर फ़रंगियों (यूरोपियों) का ग़लबा हुवा तो त़लाएअ़ बिन रुज़्ज़ैक जिस को सालेह़ कहते हैं, ने **तीस हज़ार दीनार** दे कर फ़रंगियों

से **सरे अन्वर** लेने की इजाज़त हासिल की और मअ़ फ़ौज व ख़ुद्दाम नंगे पाउं वहां से 8 जुमादल आख़िर 548 सि.हि. बरोज़ इतवार मिस्र में लाया। **उस वक़्त भी सरे अन्वर का ख़ून ताज़ा था और उस से मुश्क की सी ख़ुश्बू आती थी।** फिर उस ने सब्ज़ ह़रीर (या'नी हरे रंग के रेशम) की थेली में आबनूसी कुरसी पर रख कर उस के हम वज़्न मुश्को अ़म्बर और ख़ुश्बू उस के नीचे और इर्द गिर्द रखवा कर उस पर **मश्हदे हुसैनी** बनवाया, जो क़ाहिरा (मिस्र) में ख़ान ख़लीली के क़रीब मश्हूर है।"[1] अलबत्ता येह जो कहा गया है कि **सरे मुबारक** अ़स्क़लान या क़ाहिरा (मिस्र) में दफ़्न है, अ़ल्लामा क़ुरतुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा ने इस का इन्कार किया है।[2]

किस शक़ी की है हुकूमत हाए क्या अन्धेर है

दिन दिहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत

तुरबते सरे अन्वर की ज़ियारत

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल फ़त्ताह़ बिन अबू बक्र बिन अह़मद शाफ़ेई ख़ल्वती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने रिसाले **"नूरुल ऐन"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : शैख़ुल इस्लाम शम्सुद्दीन लक़ानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی जो कि अपने वक़्त के शैख़ुश्शुयूख़े मालिकिय्या थे, हमेशा (क़ाहिरा (मिस्र) में ख़ान ख़लीली के क़रीब) मश्हदे मुबारक में **सरे अन्वर** की ज़ियारत को ह़ाज़िर होते और फ़रमाते कि ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **सरे अन्वर** इसी मक़ाम पर है। (ایضاً ص ۱٤۸ مُلَخّصاً)

مدینہ

[1] نورالابصار للشبلنجی ص ۱٤۷-۱٤۹ وغیرہ ملخّصاً [2] انظر: التذکرۃ باحوال الموتی و امور الآخرۃ ص ۵۳۳

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي फ़रमाते हैं कि एक बार मैं और ह़ज़रते शैख़ शहाबुद्दीन बिन जलबी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **मश्हदे हुसैनी** की ज़ियारत की, उन्हें शुबा हो रहा था कि **सरे मुबारक** इस मक़ाम पर है या नहीं ? अचानक मुझ को नींद आ गई, मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स ब सूरते नक़ीब **सरे मुबारक** के पास से निकला और **हुज़ूरे अकरम**, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज्रए मुबारका में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अह़मद बिन जलबी और अ़ब्दुल वह्हाब ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के **सरे मुबारक के मदफ़न** की ज़ियारत की है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنْهُمَا وَاغْفِرْ لَهُمَا "ऐ **अल्लाह** ! इन दोनों की ज़ियारत को क़बूल फ़रमा और दोनों को बख़्श दे।" उस दिन से ह़ज़रते शैख़ शहाबुद्दीन ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मरते दम तक **सरे मुकर्रम** के मदफ़न की ज़ियारत नहीं छोड़ी। और येह फ़रमाया करते थे : मुझे यक़ीन हो गया कि ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का **सरे अन्वर** यहीं (या'नी क़ाहिरा (मिस्र) में ख़ान ख़लीली के क़रीब) तशरीफ़ फ़रमा है।

(لطائف المنن ص۳۷۸)

इन की पाकी का ख़ुदाए पाक करता है बयां
आयए तत्ह़ीर से ज़ाहिर है शाने अहले बैत

सरे अन्वर से सलाम का जवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन तमार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **सरे अन्वर** की ज़ियारत के लिये जब **मश्हदे मुबारक** के पास ह़ाज़िर होते तो अ़र्ज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

करते : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ और इस का जवाब सुनते : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يا اَبَا الْحَسن۔ एक दिन सलाम का जवाब न पाया, हैरान हुए और ज़ियारत कर के वापस आ गए। दूसरे रोज़ फिर हाज़िर हो कर सलाम किया तो जवाब पाया। अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! कल जवाब से मुशर्रफ़ न हुवा, क्या वज्ह थी ? फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! कल इस वक़्त मैं अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बातों में मश्ग़ूल था।

(نورالابصارص١٤٨)

जुदा होती हैं जानें जिस्म से जानां से मिलते हैं

हुई है करबला में गर्म मजलिस वस्लो फ़ुरक़त की

शैख़ करीमुद्दीन ख़ल्वती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त से इस मक़ाम की ज़ियारत की है। (ایضاً ص١٤٩)

इसी मन्ज़र पे हर जानिब से लाखों की निगाहें हैं

इसी आ़लम को आंखें तक रही हैं सारी ख़ल्क़त की

सरे अन्वर की अ़जीब बरकत

मन्क़ूल है : मिस्र के सुल्त़ान ''मलिक नासिर'' को एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ इत्तिलाअ़ दी गई कि येह शख़्स जानता है कि इस मह़ल में ख़ज़ाना कहां दफ़्न है मगर बताता नहीं। सुल्त़ान ने उगल्वाने के लिये उस की ता'ज़ीब या'नी अज़िय्यत देने का हुक्म दिया। मुतवल्लिये ता'ज़ीब (या'नी अज़िय्यत देने पर मामूर शख़्स) ने उस को पकड़ा और उस के सर पर **ख़ुनाफ़िस** (गुबरीले) लगाए और उस पर **क़िरमिज़** (या'नी एक

त़रह़ के रेशम के कीड़े) डाल कर कपड़ा बांध दिया। येह वोह ख़ौफ़नाक अज़िय्यत व उ़क़ूबत (तक्लीफ़) है कि इस को एक मिनट भी इन्सान बरदाश्त नहीं कर सकता। उस का दिमाग़ फटने लगता है और वोह फ़ौरन राज़ उगल देता है। अगर न बताए तो कुछ ही देर के बा'द तड़प तड़प कर मर जाता है। येह सज़ा उस शख़्स को कई मरतबा दी गई मगर उस को कुछ भी असर न हुवा बल्कि हर मरतबा ख़नाफ़िस मर जाते थे। लोगों ने इस का सबब पूछा तो उस शख़्स ने बताया कि **जब ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **का सरे मुबारक यहां मिस्र में तशरीफ़ लाया था,** اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मैं ने उस को अ़क़ीदत से अपने सर पर उठाया था, येह उसी की बरकत और करामत है।**

(الخطط المقریزیة ج۲ص۳۲۳, शामे करबला, स. 248)

फूल ज़ख़्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
ख़ून से सींचा गया है गुलसिताने अहले बैत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सरे मुबारक की चमक दमक

एक रिवायत येह भी है कि **सरे अन्वर** यज़ीदे पलीद के ख़ज़ाने ही में रहा। जब बनू उमय्या के बादशाह सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक का दौरे हुकूमत (96 हि. ता 99 हि.) आया और उन को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने **सरे अन्वर** की ज़ियारत की सआ़दत ह़ासिल की, उस वक़्त **सरे अन्वर** की मुबारक हड्डियां सफ़ेद चांदी की त़रह़ चमक रही थीं, उन्हों ने ख़ुश्बू लगाई और कफ़न दे कर मुसल्मानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करवा दिया। (ابن عساکر ج۶۹ص۱۶۱, शामे करबला, स. 249)

चेहरे में आफ़्ताबे नुबुव्वत का नूर था
आंखों में शाने सौलते[1] सरकारे बू तुराब

रिज़ाए मुस्तफ़ा का राज़

ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने ह़जर हैतमी मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي रिवायत फ़रमाते हैं कि सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुए, देखा कि शहन्शाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के साथ मुलात़फ़त (या'नी लुत़्फ़ो करम) फ़रमा रहे हैं। सुब्ह़ उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से इस ख़्वाब की ता'बीर पूछी, उन्हों ने फ़रमाया : शायद आप ने आले रसूल के साथ कोई भलाई की है। अ़र्ज़ की : जी हां ! मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के **मुबारक सर** को ख़ज़ानए यज़ीद में पाया तो उसे कफ़न दे कर अपने रुफ़क़ा के साथ उस पर नमाज़ पढ़ कर उस को दफ़्न किया है। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : आप का येही अ़मल सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशी का सबब हुवा है।

(اَلصَّواعِقُ الْمُحْرِقَة ص۱۹۹ ملخّصاً)

मुस्तफ़ा इ़ज़्ज़त बढ़ाने के लिये ता'ज़ीम दें
है बुलन्द इक़्बाल तेरा दूदमाने[2] अहले बैत

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : दबदबा 2 : दूदमाने या'नी ख़ानदान, बड़ा क़बीला

मुख़्तलिफ़ मशाहिद की वज़ाहत

ख़तीबे पाकिस्तान, वाइज़े शीरीं बयान, ह़ज़रत मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی अपनी तालीफ़ **"शामे करबला"** में तह़रीर फ़रमाते हैं : **सरे अन्वर** के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मशाहिद[1] बने हुए हैं तो येह भी हो सकता है कि इन रिवायात और मशाहिद का तअ़ल्लुक़ चन्द सरों से हो क्यूं कि यज़ीद के पास तमाम शुहदाए अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सर भेजे गए थे। तो कोई सर कहीं और कोई कहीं दफ़्न हुवा हो। और निस्बत हुस्ने अ़क़ीदत की बिना पर या किसी और वज्ह से सिर्फ़ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ कर दी गई हो। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِحَقِيْقَةِ الْحال۔

(शामे करबला, स. 249)

मग़्फ़िरत से मायूसी की लरज़ा ख़ेज़ ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद सुलैमान आ'मश कूफ़ी ताबेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ह़ज्जे बैतुल्लाह के लिये ह़ाज़िर हुवा, दौराने त़वाफ़ एक शख़्स को देखा कि ग़िलाफ़े का'बा के साथ चिमटा हुवा कह रहा था : **"या अल्लाह पाक ! मुझे बख़्श दे और मैं गुमान करता हूं कि तू मुझे नहीं बख़्शेगा।"** मैं उस की इस अ़जीब सी दुआ पर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवा कि سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيم आख़िर इस का ऐसा कौन सा गुनाह है जिस की बख़्शिश की इस को उम्मीद नहीं, मगर मैं त़वाफ़ में मसरूफ़ रहा। दूसरे फेरे में भी सुना तो वोह येही कह रहा था, मेरी ह़ैरानी में मज़ीद

1 : मश्हद की जम्अ़ मशाहिद है। मश्हद के एक मा'ना येह भी हैं : ह़ाज़िर होने की जगह।

इज़ाफ़ा हुवा। मैं ने त़वाफ़ से फ़ारिग़ हो कर उस से कहा : तू ऐसे अ़ज़ीम मक़ाम पर है जहां बड़े से बड़ा गुनाह भी बख़्शा जाता है तो अगर तू **अल्लाह** करीम से मग़्फ़िरत और रह़मत त़लब करता है तो उस से उम्मीद भी रख क्यूं कि वोह बड़ा रह़ीमो करीम है। उस शख़्स ने कहा : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! तू कौन है ? मैं ने कहा : मैं सुलैमान आ'मश (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) हूं ! उस ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे एक त़रफ़ ले गया और कहने लगा : **मेरा गुनाह बहुत बड़ा है।** मैं ने कहा : क्या तेरा गुनाह पहाड़ों, आस्मानों, ज़मीनों और अ़र्श से भी बड़ा है ? कहने लगा : हां मेरा गुनाह बहुत ज़ियादा बड़ा है ! **अफ़्सोस !** ऐ सुलैमान ! मैं उन सत्तर (70) बद नसीब आदमियों में से हूं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के **सरे अन्वर** को यज़ीदे पलीद के पास लाए थे। यज़ीदे पलीद ने उस **मुबारक सर** को शह्र के बाहर लटकाने का हुक्म दिया। फिर उस के हुक्म से उतारा गया और सोने (Gold) के त़श्त में रख कर उस के सोने के कमरे (Bedroom) में रखा गया। आधी रात के वक़्त यज़ीदे पलीद की ज़ौजा की आंख खुली तो उस ने देखा कि **इमामे आ़ली मक़ाम** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के **सरे अन्वर से ले कर आस्मान तक एक नूरानी शुआ़अ़ जगमगा रही है !** येह देख कर वोह सख़्त ख़ौफ़ज़दा हुई और उस ने यज़ीदे पलीद को जगाया और कहा : उठ कर देखो, मैं एक अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र देख रही हूं, यज़ीद ने भी उस रोशनी को देखा और ख़ामोश रहने के लिये कहा। जब सुब्ह़ हुई तो उस ने **सरे मुबारक** निकलवा कर दीबाए सब्ज़ (एक उ़म्दा क़िस्म के सब्ज़ कपड़े) के ख़ैमे में रखवा दिया और उस की निगरानी के लिये सत्तर[70] आदमी

मुक़र्रर कर दिये, मैं भी उन में शामिल था। फिर हमें हुक्म हुवा जाओ खाना खा आओ। जब सूरज ग़ुरूब हो गया और काफ़ी रात गुज़र गई तो हम सो गए। मैं ने देखा कि आस्मान पर एक बड़ा बादल छाया हुवा है और उस में से गड़गड़ाहट और परों की फड़फड़ाहट की सी आवाज़ आ रही है फिर वोह बादल क़रीब होता गया यहां तक कि ज़मीन से मिल गया और उस में से एक मर्द नुमूदार हुवा जिस पर जन्नत के दो हुल्ले थे और उस के हाथ में एक फ़र्श और कुर्सियां थीं, उस ने वोह फ़र्श बिछाया और उस पर कुर्सियां रख दीं और पुकारने लगा : **ऐ अबुल बशर ! ऐ आदम** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **! तशरीफ़ लाइये**। एक निहायत ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए और **सरे मुबारक** के पास खड़े हो कर फ़रमाया : "सलाम हो तुझ पर **ऐ अल्लाह के वली** ! सलाम हो तुझ पर ऐ बक़िय्यतुस्सालिह़ीन ! ज़िन्दा रहे तुम सईद हो कर, शहीद हुए तुम त़रीद या'नी ख़लफ़ हो कर, प्यासे रहे ह़त्ता कि **अल्लाह** पाक ने तुम्हें हम से मिला दिया। **अल्लाह** पाक तुम पर रह़्म फ़रमाए और तुम्हारे क़ातिल के लिये बख़्शिश नहीं, तुम्हारे क़ातिल के लिये कल क़ियामत के दिन दोज़ख़ का बहुत बुरा ठिकाना है।"

येह फ़रमा कर वोह उन कुर्सियों में से एक कुरसी पर तशरीफ़ फ़रमा हो गए। फिर थोड़ी देर के बा'द एक और बादल आया वोह भी इसी त़रह़ ज़मीन से मिल गया और मैं ने सुना कि एक मुनादी ने निदा की : **ऐ नबिय्यल्लाह ! ऐ नूह** (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) **! तशरीफ़ लाइये**। नागाह एक साह़िबे वजाहत ज़र्दी माइल चेहरे वाले बुज़ुर्ग दो जन्नती हुल्ले पहने हुए तशरीफ़ लाए और उन्हों ने भी वोही अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए और एक कुरसी पर बैठ गए। फिर एक और बड़ा

बादल आया और उस में से **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام नुमूदार हुए, उन्हों ने भी वोही कलिमात फ़रमाए और एक कुरसी पर बैठ गए इसी त़रह़ **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए और इसी त़रह़ के कलिमात इर्शाद फ़रमा कर कुर्सियों पर जल्वा अफ़रोज़ हो गए। फिर एक बहुत ही बड़ा बादल आया उस में से **ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और **ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा** और **ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन मुज्तबा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا और **मलाएका** नुमूदार हुए। पहले हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सरे अन्वर** के पास तशरीफ़ ले गए और **सरे मुबारक** को सीने से लगाया और बहुत रोए। फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दिया, उन्हों ने भी सीने से लगाया और बहुत रोईं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने नबिय्ये रह़मत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आ कर यूं ता'ज़ियत की :

اَلسَّلَامُ عَلَى الْوَلَدِ الطَّيِّبِ، اَلسَّلَامُ عَلَى الْخَلْقِ الطَّيِّبِ، اَعْظَمَ اللّٰهُ اَجْرَكَ وَاَحْسَنَ عَزَاءَكَ فِى ابْنِكَ الْحُسَيْنِ۔

"सलाम हो पाकीज़ा फ़ित़रत व ख़स्लत वाले पाक फ़रज़न्द पर, **अल्लाह** पाक आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत ज़ियादा सवाब अ़त़ा फ़रमाए और आप के शहज़ादए गिरामी हुसैन (के इस इम्तिह़ान) में अह़सन या'नी बेहतरीन सब्र दे।"

इसी त़रह़ **ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ नजिय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, **ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी ता'ज़ियत फ़रमाई । फिर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द कलिमात इर्शाद फ़रमाए । फिर एक फ़िरिश्ते ने **अल्लाह** पाक के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब आ कर अ़र्ज़ की : **ऐ अबुल क़ासिम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! (इस वाक़िअ़ए हाइला से) हमारे दिल पाश पाश (या'नी टुकड़े टुकड़े) हो गए हैं । मैं आस्माने दुन्या पर मुवक्कल (या'नी ज़िम्मेदार) हूं । **अल्लाह** करीम ने मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त (या'नी जैसा फ़रमाएं वैसा करने) का हुक्म दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे हुक्म फ़रमाएं तो मैं इन लोगों पर आस्मान ढा दूं और इन को तबाहो बरबाद कर दूं । फिर एक और फ़िरिश्ते ने आ कर अ़र्ज़ की : **ऐ अबुल क़ासिम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं दरियाओं पर मुवक्कल (या'नी ज़िम्मेदार) हूं, **अल्लाह** पाक ने मुझे आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त का हुक्म दिया है अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएं तो मैं इन पर त़ूफ़ान बरपा कर के इन को तहस नहस (या'नी बरबाद) कर दूं । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़िरिश्तो ! ऐसा करने से बाज़ रहो । **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन मुज्तबा** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने (सोए हुए चोकीदारों की त़रफ़ इशारा करते हुए बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में) अ़र्ज़ की : **नानाजान** ! येह जो सोए हुए हैं येही वोह लोग हैं जो मेरे भाई (हुसैन) के **सरे अन्वर** को

लाए हैं और येही निगरानी पर भी मुक़र्रर हैं । तो नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ मेरे रब के फ़िरिश्तो ! मेरे बेटे के क़त्ल के बदले में इन को क़त्ल कर दो ।" **तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ने देखा कि चन्द ही लम्ह़ों में मेरे सब साथी ज़ब्ह़ कर दिये गए ।** फिर एक फ़िरिश्ता मुझे ज़ब्ह़ करने के लिये बढ़ा तो मैं ने पुकारा, **ऐ अबुल क़ासिम** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे बचाइये और मुझ पर रह़्म फ़रमाइये ! **अल्लाह** करीम आप पर रह़्म फ़रमाए । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़िरिश्ते से फ़रमाया : "इसे रहने दो ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे क़रीब आ कर फ़रमाया : तू उन सत्तर (70) आदमियों में से है जो सर लाए थे ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ मुबारक मेरे कन्धे में डाल कर मुझे मुंह के बल गिरा दिया और फ़रमाया : "**अल्लाह पाक तुझ पर न रह़्म करे और न तुझे बख़्शे, अल्लाह पाक तेरी हड्डियों को नारे दोज़ख़ में जलाए ।**" तो येह वज्ह है कि मैं **अल्लाह** पाक की रह़मत से ना उम्मीद हूं। (शामे करबला, स. 267 ता 270, بحوالہ نور الابصار ص۱٤٩ ملخصاً) यहां येह याद रखें कि बहर ह़ाल हर गुनाह की तौबा का हुक्म है और वोह मक़्बूल भी हो सकती है, यहां ख़्वाब में क़बूल न होने के मुतअ़ल्लिक़ सख़्ती और डांट डपट के लिये है वरना ख़्वाब की ऐसी बात हुज्जत या'नी दलील नहीं।

बाग़े जन्नत छोड़ कर आए हैं मह़बूबे ख़ुदा

ऐ ज़हे क़िस्मत तुम्हारी कुश्तगाने[1] अहले बैत

हुब्बे जाहो माल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुब्बे जाहो माल बहुत ही बुरा

1 : कुश्ता की जम्अ़, मक़्तूलीन, उ़श्शाक़ ।

वबाल है। मेरे प्यारे प्यारे आक़ा, **मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "दो भूके भेड़िये बकरियों में छोड़ दिये जाएं वोह इतना नुक़्सान नहीं पहुंचाते जितना कि माल व मर्तबे का लालच इन्सान के दीन को नुक़्सान पहुंचाता है।" (ترمذی ج٤ ص١٦٦ حدیث٢٣٨٣)

यज़ीदे पलीद मालो जाह की मह़ब्बत ही की वज्ह से सानिह़ए हाइला कर्बो बला (या'नी करबला के ख़ौफ़नाक क़िस्से) के वुक़ूअ़ का बाइस बना। इस ज़ालिम बद अन्जाम को इमामे आ़ली मक़ाम सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़ाते गिरामी से अपने इक़्तिदार को ख़त़रा मह़सूस होता था। ह़ालां कि सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को दुन्याए ना पाएदार के ह़ुसूल के लिये दुन्यवी इक़्तिदार से क्या सरोकार ! आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तो कल भी उम्मते मुस्लिमा के दिलों के ताजदार थे, आज भी हैं और रहती दुन्या तक रहेंगे।

न शमिर ही का वोह सितम रहा, न यज़ीद की वोह जफ़ा रही
जो रहा तो नाम हुसैन का, जिसे ज़िन्दा रखती है करबला

दुन्या की मह़ब्बत हर बुराई की जड़ है

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی से रिवायत है कि नबियों के सरदार, मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : حُبُّ الدُّنْيَا رَأْسُ كُلِّ خَطِيْئَةٍ या'नी दुन्या की मह़ब्बत हर बुराई की जड़ है। (الزهد لابن ابی الدنیا ص٢٦ حدیث٩)

यज़ीदे पलीद का दिल चूंकि दुन्याए ना पाएदार की मह़ब्बत से सरशार था इस लिये वोह शोहरत व इक़्तिदार की हवस में गिरिफ़्तार हो

गया। और इस हवस ने उसे उस के अन्जाम से ग़ाफ़िल कर के इमामे आ़ली मक़ाम और आप के रुफ़क़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के ख़ूने नाहक़ करवाने तक पहुंचा दिया। जिस इक़्तिदार की ख़ातिर उस ने करबला में ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाईं वोह इक़्तिदार उस के लिये कुछ ज़ियादा ही ना पाएदार साबित हुवा। बद नसीब यज़ीद सिर्फ़ तीन बरस छ[6] माह तख़्ते हुकूमत पर शैत़नत (या'नी शरारतो ख़बासत) कर के रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ 64 सि.हि. को मुल्के शाम के शहर "हिम्स" के अ़लाक़े हुव्वारीन में 39 साल की उ़म्र में मर गया।

वोह तख़्त है किस क़ब्र में वोह ताज कहां है?
ऐ ख़ाक बता ज़ोरे यज़ीद आज कहां है?

इब्ने ज़ियाद का दर्दनाक अन्जाम

यज़ीदे पलीद की वोह चन्डाल चोकड़ी (या'नी फ़सादी ग्रूप) जिस ने मैदाने करबला में गुलशने रिसालत के मदनी फूलों को ख़ाको ख़ून में तड़पाया था। उन का भी इ़ब्रतनाक अन्जाम हुवा। यज़ीदे पलीद के बा'द सब से बड़ा मुजरिम कूफ़े का गवर्नर उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद था। इसी बद निहाद (बद ख़ू, बुरी फ़ित़रत वाले शख़्स) के हुक्म पर इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और आप के अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाया गया था। नैरंगिये दुन्या (या'नी दुन्या के धोके) का तमाशा देखिये कि मुख़्तार सक़फ़ी की तरकीब से इब्राहीम बिन मालिक अश्तर की फ़ौज के हाथों दरियाए फ़ुरात के कनारे सिर्फ़ 6 बरस के बा'द या'नी 10 मुह़र्रमुल ह़राम 67 सि.हि. को इब्ने ज़ियादे बद

निहाद इन्तिहाई ज़िल्लत के साथ मारा गया ! लश्करियों ने उस का सर काट कर "इब्राहीम" को पेश कर दिया और इब्राहीम ने "मुख़्तार" के पास कूफ़ा भिजवा दिया । (सवानेह़े करबला, स. 182 मुलख़्ख़सन)

जब सरे महशर वोह पूछेंगे बुला के सामने
क्या जवाबे जुर्म दोगे तुम ख़ुदा के सामने

रोने वाला कोई न था

दारुल इमारत (Capital) कूफ़ा को आरास्ता किया गया और उसी जगह इब्ने ज़ियादे बद निहाद का **सरे नापाक** रखा गया जहां 6 बरस क़ब्ल इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का **सरे पाक** रखा गया था । इस बद नसीब पर रोने वाला कोई नहीं था बल्कि इस की मौत पर जश्न मनाया जा रहा था ।

इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मारा बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि जब उ़बैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद का सर मअ़ उस के साथियों के सरों के ला कर रखा गया तो मैं उन के पास गया । अचानक ग़ुल पड़ गया : "आ गया ! आ गया !!" मैं ने देखा कि एक **सांप** आ रहा है, सब सरों के बीच में होता हुवा इब्ने ज़ियाद के (नापाक) नथनों में दाख़िल हो गया और थोड़ी देर ठहर कर चला गया ह़त्ता कि ग़ाइब हो गया । फिर ग़ुल पड़ा : "आ गया ! आ गया !!" दो या तीन बार ऐसा ही हुवा ।

(ترمذی ج٥ ص٤٣١ حدیث٣٨٠٥)

यज़ीदियों की लाशें घोड़ों की टापों तले

इब्ने ज़ियाद, इब्ने सा'द, शमिर, क़ैस इब्ने अश्अ़स किन्दी,

ख़ौली इब्ने यज़ीद, सिनान इब्ने अनस नख़ई, अ़ब्दुल्लाह इब्ने क़ैस, यज़ीद बिन मालिक और बाक़ी तमाम अश्क़िया[1] जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के क़त्ल में शरीक थे और साई (या'नी कोशिश करने वाले) थे त़रह़ त़रह़ की उ़क़ूबतों (या'नी अज़िय्यतों) से क़त्ल किये गए और उन की लाशें घोड़ों की टापों से पामाल कराई गईं।

(सवानेह़े करबला, स. 183)

कब तलक तुम हुकूमत पे इतराओगे कब तक आख़िर ग़रीबों को तड़पाओगे
ज़ालिमो! बा'द मरने के पछताओगे तुम जहन्नम के ह़क़दार हो जाओगे

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मुख़्तार सक़फ़ी ने चुन चुन कर यज़ीदियों का सफ़ाया किया। ज़ालिमों को क्या मा'लूम था कि **ख़ूने शुहदा** रंग लाएगा और सल्त़नत के पुरज़े उड़ जाएंगे। हर एक शख़्स जो क़त्ले इमाम में शरीक हुवा है त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों से हलाक होगा। **वोही फ़ुरात का कनारा होगा, वोही आ़शूरे का दिन, वोही ज़ालिमों की क़ौम होगी और मुख़्तार के घोड़े उन्हें रौंदते होंगे।** उन की जमाअ़तों की कसरत उन के काम न आएगी। उन के हाथ पाउं काटे जाएंगे, घर लूटे जाएंगे, सूलियां दी जाएंगी, लाशें सड़ेंगी और दुन्या में हर शख़्स तुफ़ तुफ़ करेगा। उन की हलाकत पर ख़ुशी मनाई जाएगी। मा'रिकए जंग में अगर्चे उन की ता'दाद हज़ारों की होगी मगर वोह दिल छोड़ कर हीजड़ों की त़रह़ भागेंगे और चूहों और कुत्तों की त़रह़ उन्हें जान बचानी मुश्किल होगी, जहां पाए जाएंगे मार दिये जाएंगे।

1 : शक़ी की जम्अ़, बद बख़्त लोग।

दुन्या में क़ियामत में इन पर नफ़रत व मलामत की जाएगी ।

(सवानेह़े करबला, स. 184)

देखे हैं येह दिन अपने ही हाथों की बदौलत

सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

मुख़्तार ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने बारे में **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर को कोई नहीं जानता कि क्या है। मुख़्तार सक़फ़ी जिस ने क़ातिलीने हुसैन को चुन चुन कर मारा और मुह़िब्बीने हुसैन के दिल जीते मगर एक रिवायत येह है कि उस ने **नुबुव्वत का दा'वा** कर दिया था और कहने लगा : "मेरे पास वह़्य आती है।"[1]

वस्वसा : अगर येह क़ौल दुरुस्त है तो यहां वस्वसा पैदा हो सकता है कि इतना ज़बर दस्त मुह़िब्बे अहले बैत किस त़रह़ गुमराह हो कर मुरतद हो सकता है ? क्या किसी ऐसे को भी ऐसे शानदार कारनामे करने की तौफ़ीक़ ह़ासिल हो सकती है ?

वस्वसे का इलाज : अल्लाह करीम बे नियाज़ है। उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** से हम सभी को डरना चाहिये कि न जाने हमारा अपना क्या बनेगा ! देखिये ! **शैत़ान** भी बहुत ज़बर दस्त आ़लिमो फ़ाज़िल और आ़बिद था। उस ने हज़ारों बरस इबादत की थी मगर वोह काफ़िर व मल्ऊ़न हो गया। बल्अ़म बिन बाऊ़रा भी बहुत बड़ा आ़लिम, आ़बिदो ज़ाहिद और मुस्तजाबुद्दा'वात (या'नी जिन की दुआ़एं क़बूल होती हैं) उन में

[1] : انظر: مسند امام احمد ١ / ٤٧٣، حديث ١٩٠٩، شرح مسلم للنووى ٨ / ١٠٠، فتح البارى ٧ / ٥١٥، مرقاة المفاتيح ١٠ / ٣٤٢، اشعة اللمعات ٤ / ٦٣٦، الصواعق المحرقة ص١٩٨، فيض القدير ٢ / ٦٠٠.

www.dawateislami.net

से था । उस को **इस्मे आ'ज़म** का इल्म था, अपनी जगह बैठ कर रूहानिय्यत के सबब अ़र्शे आ'ज़म को देख लिया करता था मगर शक़ावत (बद बख़्ती) जब ग़ालिब आ गई तो बे ईमान हो कर मर गया और कुत्ते की शक्ल में दाख़िले जहन्नम होगा । **इब्ने सक़ा** जो कि ज़हीन तरीन आ़लिम व मुनाज़िर था मगर **वक़्त के ग़ौस** की बे अदबी का मुरतकिब हो गया बिल आख़िर नसरानी (क्रिस्चेन) शहज़ादी के इश्क़ में मुब्तला हो कर क्रिस्चेन मज़हब क़बूल करने के बा'द ज़िल्लत की मौत मर गया । **अल्लाह** पाक ने अपने ह़बीबे पाक ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वह़्य फ़रमाई कि मैं ने **यह़्या बिन ज़करिय्या** (عَلَيْهِمَا السَّلَام) के बदले सत्तर हज़ार (70000) अफ़राद मारे थे और तुम्हारे नवासे के बदले एक लाख चालीस हज़ार मारूंगा । (اَلْمُستَدرَك ج۳ص۴۸۵ حديث۴۲۰۸) तो तारीख़ शाहिद है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या बिन ज़करिय्या** عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ख़ूने नाह़क़ का बदला लेने के लिये **अल्लाह** पाक ने बुख़्ते नस्सर जैसे ज़ालिम को मुक़र्रर किया जो ख़ुदाई का दा'वा करता था । इसी त़रह़ ह़ज़रते इमामे आ़ली मक़ाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ख़ूने नाह़क़ का बदला लेने के लिये **अल्लाह** पाक ने **मुख़्तार सक़फ़ी** जैसे कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) को मुक़र्रर फ़रमाया । (शामे करबला, स. 285 ब तग़य्युर)

अल्लाह करीम अपनी मस्लह़तें ख़ुद ही जानता है, वोह अपनी मशिय्यत (या'नी मरज़ी) से ज़ालिमों के ज़रीए भी ज़ालिमों को हलाक करता है । चुनान्चे पारह 8 **सूरतुल अन्आ़म** आयत 129 में इर्शाद होता है :

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और यूं ही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत़ करते हैं, बदला उन के किये का ।

हुज़ूरे पुरनूर, शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** पाक इस दीने इस्लाम की मदद फ़ाजिर (या'नी ना फ़रमान) इन्सान के ज़रीए से भी करा लेता है।"

(بُخاری ج۲ص۳۲۹حدیث۳۰۶۲)

अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना चाहिये

अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से हमें हर वक़्त डरते रहना चाहिये। अपनी इल्मिय्यत, शानो शौकत और जिस्मानी ताक़त पर घमन्ड (या'नी तकब्बुर) से बचना और फूं फां (या'नी अकड़ दिखाने) से परहेज़ करना ज़रूरी है कि न मा'लूम इल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ में हमारा क्या मक़ाम हो। कहीं ऐसा न हो कि ईमान बरबाद हो जाए। ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनाने, इश्के़ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व सहाबा व अहले बैत رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم पाने, दीनी मा'लूमात बढ़ाने, अपने आप को बुराइयों से बचाने, नेकियां अपनाने और ख़ूब ख़ूब सवाब कमाने की ख़ातिर तमाम इस्लामी भाइयों को चाहिये कि हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िलों** में **आशिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र फ़रमाएं। इस्लामी भाई रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए 72 **मदनी इन्आमात** और इस्लामी बहनें 63 **मदनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

या अल्लाह पाक ! शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सहाबए किराम, शहीदे मज़्लूम इमामे आ़ली मक़ाम और जुम्ला शहीदानो असीराने करबला عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का वासिता हमारा ईमान सलामत रख, हमें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

क़ब्रो ह़श्र में अमान बख़्श और हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह पाक!** हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा, जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ईमानो आ़फ़िय्यत के साथ शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा के वासिते
कर बलाएं रद शहीदे करबला के वासिते

आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल

“शहीदे करबला” के नव ह़ुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरे को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त

﴾1﴿ **आ़शूरा** (या'नी 10 मुह़र्रमुल ह़राम) के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी ﴾2﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश की तौबा क़बूल हुई ﴾3﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की तौबा क़बूल हुई ﴾4﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम** ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए ﴾5﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा** रूहुल्लाह عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा किये गए[1] ﴾6﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा** कलीमुल्लाह عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को नजात मिली और फ़िरऔ़न अपनी क़ौम समेत (दरियाए नील में) ग़र्क़ हुवा[2] ﴾7﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को

مدینہ

1: الفردوس ج۱ ص۲۲۳ حدیث ۸۵٦ 2: بُخاری ج۲ ص۴۳۸ حدیث ۳۳۹۷۔۳۳۹۸

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

क़ैदख़ाने (Jail) से रिहाई मिली ﴾8﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूनुस** عَلٰى نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए[1] ﴾9﴿ सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को मअ़ शहज़ादगान व रुफ़का तीन दिन भूका प्यासा रखने के बा'द इसी **आ़शूरा** के रोज़ मैदाने करबला में निहायत बे रह़मी के साथ शहीद किया गया।

"या हुसैन" के छ[6] हुरूफ़ की निस्बत से मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल (या'नी रात के नवाफ़िल) है।"[2]

﴾2﴿ **त़बीबों** के त़बीब, **अल्लाह** पाक के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **मुह़र्रम** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है।[3]

﴾3﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आ़शूरे** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़ज़मत वाला दिन है कि इस में मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह** पाक ने नजात दी और फ़िरऔ़न

---

[1]: فیض القدیر ج٥ص٢٨٨تحت الحدیث٧٠٧٥ [2]: مسلم ص٥٩١ حدیث١١٦٣ [3]: مُعجَم صغیر ج٢ ص٧١

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

और उस की क़ौम को डुबो दिया, लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बत़ौरे शुक्राना इस दिन का रोज़ा रखा, तो हम भी रोज़ा रखते हैं । इर्शाद फ़रमाया : हम मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तुम से ज़ियादा ह़क़दार हैं । तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया । (مسلم ص٥٧٢حديث١١٣٠)

4 **सय्यिदुना** अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी दिन के **रोज़े** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तजू (रग़बत) फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आ़शूरे** का दिन और येह कि **रमज़ान** का महीना ।"

(بُخارِی ج١ص٦٥٧حديث٢٠٠٦)

5 **नबिय्ये** रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदियों की मुख़ालफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो । (مُسنَد اِمام اَحمَد ج١ص٥١٨حديث٢١٥٤) **आ़शूरे** का रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं[9] या ग्यारहवीं[11] मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है । अगर किसी ने सिर्फ़ 10 मुह़र्रमुल ह़राम का रोज़ा रखा तब भी जाइज़ है ।

6 **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है । (مُسلِم ص٥٩٠حديث١١٦٢)

सारा साल घर में बरकत

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुह़र्रम की **नवीं**[9] और **दसवीं**[10] को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा, बाल बच्चों के लिये **दसवीं**[10] मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में बरकत रहेगी, बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी आज़्माया हुवा) है। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 131)

सारा साल आंखें न दुखें

सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो शख़्स यौमे आ़शूरा इस्मिद सुरमा आंखों में लगाए तो उस की आंखें कभी भी न दुखेंगी। (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۶۷حدیث۳۷۹۷)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

करबला वालों के ग़म के मुतअ़ल्लिक़ एक अहम फ़त्वा

"फ़तावा रज़विय्या" में मौजूद एक सुवाल मअ़ जवाब का ख़ुलासा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : **सुवाल :** अहले सुन्नत व जमाअ़त को अ़शरए मुह़र्रमुल ह़राम में रन्जो ग़म करना जाइज़ है या नहीं ? **जवाब :** कौन सा सुन्नी होगा जिसे वाक़िअ़ए हाइला करबला (या'नी करबला के ख़ौफ़नाक क़िस्से) का ग़म नहीं या उस की याद से उस का दिल मह़ज़ून (या'नी रन्जीदा) और आंख पुरनम (या'नी अश्कबार) नहीं, हां मसाइब (या'नी मुसीबतों) में हम को सब्र का हुक्म फ़रमाया है, जज़्अ़ फ़ज़्अ़ (या'नी रोने पीटने) को शरीअ़त मन्अ़ फ़रमाती है, और जिसे वाक़ेई दिल

में ग़म न हो उसे झूटा इज़्हारे ग़म रिया है और क़स्दन ग़म आवरी व ग़म परवरी (या'नी जान बूझ कर ग़म की कैफ़िय्यत पैदा करना और ग़म पाले रहना) ख़िलाफ़े रिज़ा है जिसे इस का ग़म न हो उसे बे ग़म न रहना चाहिये बल्कि इस ग़म न होने का ग़म चाहिये कि उस की मह़ब्बत नाक़िस है और जिस की मह़ब्बत नाक़िस उस का ईमान नाक़िस। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 486 ता 488 मुलख़्ख़सन) आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "(ज़िक्रे शहादत में) न ऐसी बातें कही जाएं जिस में इन की बे क़द्री या तौहीन निकलती हो।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 738)

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

28 ज़ुल क़ा'दह 1439 सि.हि.
11-08-2018

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن کریم		الاوائل فی التاریخ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	معجم الصحابہ	مکتبۃ دار البیان کویت
ترمذی	دار الفکر بیروت	کشف المحجوب	نوائے وقت پرنٹرز مرکز الاولیاء لاہور
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	الصواعق المحرقۃ	مدینۃ الاولیاء ملتان
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	التذکرۃ	دار السلام مصر
معجم صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	[illegible]	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المستدرک	دار المعرفۃ بیروت	الخطط المقریزیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شواہد النبوۃ	مکتبۃ الحقیقۃ استنبول
الزہد	دار ابن کثیر دمشق	تذکرۃ الخواص	تہران
الفردوس	دار الکتب العلمیۃ بیروت	نور الابصار	مصطفی البابی الحلبی مصر
شرح مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت	سوانح کربلا	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
فتح الباری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شام کربلا	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
مرقاۃ	دار الفکر بیروت	کرامات صحابہ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
اشعۃ اللمعات	کوئٹہ	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
فیض القدیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الطبقات	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
विलादते बा करामत	1	सरे मुबारक की चमक दमक	21
नाम व अल्क़ाब	2	रिज़ाए मुस्तफ़ा का राज़	22
इमामे हुसैन के फ़ज़ाइल पर 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा	3	मुख़्तलिफ़ मशाहिद की वज़ाहत	23
रुख़्सार से अन्वार का इज़्हार	3	मग़्फ़िरत से मायूसी की लरज़ा ख़ेज़ हिकायत	23
कूंएं का पानी उबल पड़ा	4	हुब्बे जाहो माल	28
सोने के सिक्कों की थेलियां	4	दुन्या की महब्बत हर बुराई की जड़ है	29
घोड़े ने बद लगाम को आग में डाल दिया	5	इब्ने ज़ियाद का दर्दनाक अन्जाम	30
सियाह बिच्छू ने डंक मारा	6	रोने वाला कोई न था	31
गुस्ताख़े हुसैन प्यासा मरा	7	इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप	31
करामात इत्मामे हुज्जत की कड़ी थी	8	यज़ीदियों की लाशें घोड़ों की टापों तले	31
नूर का सुतून और सफ़ेद परिन्दे	9	सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है	32
ख़ौली बिन यज़ीद का दर्दनाक अन्जाम	10	मुख़्तार ने नुबुव्वत का दा'वा कर दिया !	33
सरे अक़्दस की तिलावत	12	अल्लाह की ख़ुफ़्या तदबीर से डरना चाहिये	35
ख़ून से लिखा हुवा शे'र	14		
सरे अन्वर की करामत से राहिब का क़बूले इस्लाम	15	आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त	36
दिरहमो दीनार ठीक्रियां बन गईं	15	आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल	37
सरे अन्वर कहां मदफ़ून हुवा ?	17	सारा साल घर में बरकत	39
तुरबते सरे अन्वर की ज़ियारत	18	सारा साल आंखें न दुखें	39
सरे अन्वर से सलाम का जवाब	19	करबला वालों के ग़म के मुतअ़ल्लिक़ एक अहम फ़तवा	39
सरे अन्वर की अ़जीब बरकत	20		

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **''फ़िक्रे मदीना''** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ ''अपनी इस्लाह़ के लिये **''मदनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी क़ाफ़िलों''** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ

ISBN
0148129

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अह़मदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net